ANSWER KEY & MARKING SCHEME · CBSE CLASS 11

कबीर — हम तौ एक एक करि जांनां · संतों देखत जग बौराना (आरोह भाग-1)

Hindi · Chapter 1 · Use this with the Board Paper · Companion to Quick Drill

HOW TO USE

Attempt the Board Paper first (closed-book, full time). Then come here. For 2-mark+ questions, compare your answer to the model. For 3-4 mark questions, also consult the **Topper Templates** below — these show the exact step-by-step structure that scores full marks per CBSE marking-scheme conventions.

MODEL ANSWERS · BOARD PAPER

खंड क — काव्यांश-आधारित बोध (6 अंक)

Q1. निम्नलिखित प्रसंग पढ़कर उत्तर दीजिए — 'कबीर कहते हैं कि उन्होंने ईश्वर को एक ही जाना है। जैसे एक ही सोने से अनेक गहने बनते हैं और एक ही जल में अनेक लहरें उठती हैं, वैसे ही चराचर जगत में एक ही परम सत्ता व्याप्त है। इसी एक को न पहचान पाने के कारण हिन्दू एवं तुर्क (मुसलमान) में भेद उत्पन्न हुआ है।' (क) कबीर ने ईश्वर को कैसा बताया है? (2) (ख) उन्होंने एकता समझाने के लिए कौन-से दृष्टांत दिए? (2) (ग) इस प्रसंग का अंतर्निहित संदेश क्या है? (2) [6 marks]

Ans: (क) कबीर ने ईश्वर को 'एक' अर्थात निराकार, अद्वैत एवं सर्वव्यापी बताया है। उनके अनुसार समस्त चराचर जगत में एक ही परम सत्ता व्याप्त है; नाम-रूप अनेक होने पर भी ईश्वर एक ही है, चाहे उसे 'केसव' कहें या 'करीम'। (ख) एकता (अद्वैत) समझाने के लिए कबीर सहज, अनुभव-जन्य दृष्टांत देते हैं — (1) एक ही सोने (कंचन) से अनेक प्रकार के गहने बनते हैं, पर मूल तत्त्व एक ही सोना है; (2) एक ही जल में असंख्य लहरें (तरंग) उठती हैं, पर लहर जल से भिन्न नहीं। (इसी क्रम में बीज-वृक्ष का दृष्टांत भी आता है।) इन मूर्त उदाहरणों से वे गूढ़ अध्यात्म को सरल बना देते हैं। (ग) इस प्रसंग का अंतर्निहित संदेश यह है कि जब ईश्वर एक ही है, तो हिन्दू-तुर्क (मुसलमान) का धार्मिक भेद अज्ञान-जनित एवं निरर्थक है। कबीर सामाजिक-धार्मिक समता एवं समन्वय का आह्वान करते हैं — मनुष्य को बाह्य-भेद त्यागकर एक निराकार ईश्वर की सच्ची भक्ति एवं परस्पर प्रेम अपनाना चाहिए।

खंड ख — लघु उत्तरीय (3 × 3 = 9 अंक)

Q2. कबीर ने संसार को 'बौरा' (पागल) क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए। [3 marks]

Ans: कबीर ने 'संतों देखत जग बौराना' सबद में संसार को 'बौरा' (पागल) इसलिए कहा है कि वह सच्चे ज्ञान एवं अंतर्मन की भक्ति को छोड़कर पाखंड एवं बाह्याडंबरों में फँस गया है। संसार ने असत्य को सत्य एवं सत्य को असत्य मान लिया है — यदि कोई सच्ची बात कहे तो लोग उसे मारने दौड़ते हैं, जबकि झूठे ढोंगियों पर विश्वास करते हैं। लोग पत्थर की मूर्ति पूजते हैं, दिखावटी तीर्थ-स्नान करते हैं, माला-टीका एवं टोपी जैसे बाह्य-चिह्न धारण करते हैं, और राम-रहीम के नाम पर परस्पर झगड़ते-मरते हैं। यह विवेकहीनता एवं अंधविश्वास ही संसार का 'बौरापन' है। यह जन्मजात मूर्खता नहीं, अपितु सच्चे ज्ञान से विमुख होकर आडंबरों में भटक जाने की दयनीय अवस्था है, जिस पर कबीर गहरा क्षोभ प्रकट करते हैं।

Q3. कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी' क्यों कहा जाता है? इसकी विशेषताएँ बताइए। [3 marks]

Ans: कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी' (पंचमेल खिचड़ी) इसलिए कहा जाता है कि वह साधु-संतों के घुमक्कड़ जीवन से उपजी एक मिश्रित भाषा है, जिसमें ब्रज, अवधी, राजस्थानी, पंजाबी, खड़ीबोली एवं अरबी-फ़ारसी के शब्द घुले-मिले हैं। इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं — (1) सहजता एवं लोकधर्मिता — यह जन-सामान्य की बोली है, परिष्कृत-साहित्यिक नहीं; (2) अनुभव-जन्यता — कबीर शास्त्रीय रूप से पढ़े-लिखे न थे ('मसि कागद छुयो नहिं'), अतः उनकी भाषा प्रत्यक्ष अनुभव एवं सत्संग से उपजी है; (3) प्रहारकता — पाखंड-खंडन के लिए यह तीखी एवं निर्भीक है; (4) दृष्टांत-बहुलता एवं गेयता — सरल उदाहरणों एवं गेय लय से युक्त। यही सधुक्कड़ी भाषा कबीर की वाणी को सजीव, सशक्त एवं जन-जन तक पहुँचने योग्य बनाती है।

Q4. इन रचनाओं के आधार पर कबीर के समन्वयकारी (हिन्दू-मुस्लिम एकता) दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए। [3 marks]

Ans: कबीर एक प्रबल समन्वयकारी संत-कवि हैं, जो हिन्दू एवं मुसलमान के बीच मानवीय एकता एवं समता स्थापित करना चाहते हैं। उनका दृष्टिकोण कई रूपों में प्रकट होता है — (1) ईश्वर की एकता — वे सिद्ध करते हैं कि 'केसव' (हिन्दू) एवं 'करीम' (मुसलमान) एक ही निराकार ईश्वर के दो नाम हैं; नाम-भेद से तत्त्व-भेद नहीं होता। (2) निष्पक्ष आडंबर-खंडन — वे हिन्दू-आडंबर (पत्थर-पूजा, तीर्थ, माला-टीका) एवं मुस्लिम-आडंबर (टोपी, रोज़ा, बाँग) — दोनों पर समान प्रहार करते हैं, किसी एक का पक्ष नहीं लेते। (3) झगड़े पर व्यंग्य — वे कटाक्ष करते हैं कि लोग राम-रहीम के नाम पर लड़ते-मरते हैं, जो सबसे बड़ा बौरापन है। (4) सच्ची भक्ति का संदेश — वे बाह्य-भेद त्यागकर अंतर्मन की निर्मलता एवं प्रेम से एक ईश्वर की भक्ति का आह्वान करते हैं। इस प्रकार कबीर साम्प्रदायिक सौहार्द एवं मानवीय भाईचारे के अग्रदूत हैं, जिनका संदेश आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

खंड ग — दीर्घ उत्तरीय (5 + 6 + 4 = 15 अंक)

Q5. पहले पद के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कबीर ने ईश्वर की एकता (अद्वैत) को किन दृष्टांतों से प्रतिपादित किया है। उनके कम-से-कम तीन दृष्टांत पाठ-संदर्भ सहित लिखिए। [5 marks]

Ans: पद 'हम तौ एक एक करि जांनां' में कबीर निर्गुण-निराकार ब्रह्म की एकता (अद्वैत) का सशक्त प्रतिपादन करते हैं। वे घोषणा करते हैं कि उन्होंने ईश्वर को 'एक' ही जाना है, चाहे उसे कोई 'केसव' कहे या 'करीम'। इस अद्वैत-भाव को वे सहज, अनुभव-जन्य दृष्टांतों से समझाते हैं — (1) सोना एवं गहने — जैसे एक ही सोने (कंचन) से कंगन, हार, अँगूठी आदि अनेक गहने बनते हैं, परंतु उन सबका मूल तत्त्व एक ही सोना है; इसी प्रकार नाम-रूप अनेक होते हुए भी परम सत्ता एक ही है। (2) जल एवं तरंग — जैसे एक ही जल में असंख्य लहरें (तरंग) उठती हैं, परंतु प्रत्येक लहर जल से भिन्न नहीं, अंततः सब जल ही है; वैसे ही चराचर जगत के समस्त रूप उसी एक परम-तत्त्व की अभिव्यक्ति हैं। (3) बीज एवं वृक्ष — जैसे अनेक बीजों एवं उनसे उपजे अनेक वृक्षों में एक ही जीवन-तत्त्व विद्यमान रहता है, वैसे ही सृष्टि के नाना रूपों में एक ही चेतना व्याप्त है। इन तीनों दृष्टांतों द्वारा कबीर सिद्ध करते हैं कि हिन्दू एवं तुर्क (मुसलमान) का धार्मिक भेद इसी एक सत्य को न पहचान पाने के अज्ञान से उत्पन्न हुआ है। अतः उनका संदेश सामाजिक-धार्मिक समता एवं समन्वय का है — जब ईश्वर एक है, तो मनुष्य-मनुष्य के बीच का भेद निरर्थक है। यही पद की कालजयी विशेषता है।

Q6. 'संतों देखत जग बौराना' सबद के आधार पर कबीर द्वारा किए गए बाह्याडंबर-खंडन एवं उनके समाज-सुधारक दृष्टिकोण का विस्तार से वर्णन कीजिए। [6 marks]

Ans: सबद 'संतों देखत जग बौराना' में कबीर एक निर्भीक समाज-सुधारक के रूप में संसार के पाखंड एवं बाह्याडंबर पर तीखा प्रहार करते हैं। (1) 'बौरा' संसार — कबीर वेदना के साथ कहते हैं कि संसार पागल (बौरा) हो गया है, क्योंकि उसने सच्चे ज्ञान एवं अंतर्मन की भक्ति को छोड़कर असत्य आडंबरों को सत्य मान लिया है; सच कहने वाले को लोग मारने दौड़ते हैं, झूठे ढोंगियों पर विश्वास करते हैं। (2) हिन्दू-आडंबर का खंडन — वे पत्थर की मूर्ति-पूजा को व्यर्थ ठहराते हैं ('पाहन पूजे हरि मिलै' असंभव है); दिखावटी तीर्थ-स्नान, माला फेरना एवं माथे पर टीका लगाना — ये मात्र बाह्य-चिह्न हैं, इनसे सच्ची भक्ति का कोई संबंध नहीं। (3) मुस्लिम-आडंबर का खंडन — वे निष्पक्ष भाव से टोपी पहनना, दिखावटी रोज़ा-नमाज़ एवं बाँग (अजान) देकर पीर बन बैठना — इन मुस्लिम बाह्याचारों का भी समान खंडन करते हैं। किसी एक धर्म का पक्ष न लेना कबीर की निष्पक्षता का प्रमाण है। (4) राम-रहीम पर व्यंग्य — वे तीखा कटाक्ष करते हैं कि लोग 'राम' एवं 'रहीम' के नाम पर परस्पर झगड़ते-मरते हैं, जबकि दोनों एक ही ईश्वर के नाम हैं — यही सबसे बड़ा बौरापन है। (5) समाज-सुधारक दृष्टिकोण एवं निष्कर्ष — कबीर का स्पष्ट संदेश है कि सच्चा ईश्वर बाह्य-चिह्नों, मंदिर-मस्जिद या मूर्ति-तीर्थ में नहीं, अपितु अंतर्मन की निर्मलता, विवेक एवं प्रेम में बसता है। वे मनुष्य को आत्म-शुद्धि, अंधविश्वास-त्याग एवं साम्प्रदायिक सौहार्द की प्रेरणा देते हैं। इस प्रकार कबीर मात्र कवि नहीं, अपितु समता एवं मानवता के प्रबल प्रवक्ता हैं, जिनका यह सुधारवादी स्वर आज भी उतना ही प्रासंगिक एवं आवश्यक है।

Q7. कबीर ने धर्म के बाह्याडंबर त्यागकर एक ईश्वर की सच्ची भक्ति एवं हिन्दू-मुसलमान एकता का संदेश दिया है। एक विद्यार्थी के रूप में आप इस संदेश को अपने जीवन एवं समाज में किस प्रकार अपना सकते हैं? अपने शब्दों में लिखिए। (मूल्य-आधारित प्रश्न) [4 marks]

Ans: कबीर का संदेश है कि धर्म के बाह्य-दिखावे एवं संकीर्णता त्यागकर मनुष्य को एक निराकार ईश्वर की सच्ची, अंतर्मन की भक्ति करनी चाहिए तथा हिन्दू-मुसलमान सहित समस्त मानव-जाति में समता एवं प्रेम-भाव रखना चाहिए। एक विद्यार्थी के रूप में हम इस संदेश को इस प्रकार अपना सकते हैं — (1) सर्व-धर्म-समभाव — विद्यालय एवं समाज में हम सभी धर्मों एवं समुदायों के मित्रों के साथ समान आदर एवं प्रेम का व्यवहार करें, किसी के साथ धर्म-जाति के आधार पर भेद न करें। (2) अंधविश्वास-त्याग एवं विवेक — हम बाह्य-दिखावे एवं रूढ़ियों के स्थान पर तर्क, ज्ञान एवं सच्ची नैतिकता को महत्त्व दें; आडंबर के बजाय अच्छे कर्म, ईमानदारी एवं सेवा को धर्म मानें। (3) साम्प्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा — हम अपने आस-पास भाईचारे एवं एकता का वातावरण बनाएँ, धार्मिक झगड़ों एवं अफवाहों से दूर रहें तथा दूसरों को भी समता का संदेश दें। (4) आत्म-शुद्धि — कबीर की भाँति हम बाह्य-प्रदर्शन से अधिक अपने हृदय की निर्मलता, सच्चाई एवं करुणा पर ध्यान दें। इस प्रकार कबीर का समता, समन्वय एवं सच्ची भक्ति का संदेश एक विद्यार्थी को उत्तम नागरिक एवं संवेदनशील मनुष्य बनने की प्रेरणा देता है। (कोई भी तीन प्रासंगिक बिंदु स्वीकार्य।)

★ TOPPER ANSWER TEMPLATES — 3 TEMPLATES · MEMORISE THE FORMAT

★ TOPPER TEMPLATE — 5 अंक — भावार्थ-लेखन — 'पहले पद के आधार पर कबीर ने ईश्वर की एकता (अद्वैत) को किन दृष्टांतों से समझाया है? भावार्थ सहित स्पष्ट कीजिए।'

वार्षिक

Step 1 [1 mark]	**केंद्रीय भाव एवं प्रसंग**	पहले पद 'हम तौ एक एक करि जांनां' में कबीर निर्गुण-निराकार ब्रह्म की एकता (अद्वैत) का प्रतिपादन करते हैं। वे घोषणा करते हैं कि उन्होंने ईश्वर को 'एक' ही जाना-पहचाना है। हिन्दू-तुर्क (मुसलमान) का भेद इसी एक सत्ता को न पहचान पाने के कारण उत्पन्न हुआ है — वस्तुतः दोनों का ईश्वर एक ही है।
Step 2 [1 mark]	**पहला दृष्टांत — सोना एवं गहने**	कबीर कहते हैं कि जैसे एक ही सोने (कंचन) से अनेक प्रकार के आभूषण बन जाते हैं — कंगन, हार, अँगूठी — परंतु उन सबका मूल-तत्त्व एक ही सोना है; वैसे ही नाम-रूप अनेक होते हुए भी परम सत्ता एक ही है। नाम-भेद से तत्त्व-भेद नहीं हो जाता।
Step 3 [1 mark]	**दूसरा दृष्टांत — जल एवं तरंग**	दूसरे दृष्टांत में कबीर जल एवं उसकी लहरों (तरंग) का उदाहरण देते हैं — एक ही जल में असंख्य लहरें उठती हैं, परंतु प्रत्येक लहर जल से भिन्न नहीं; अंततः सब जल ही है। इसी प्रकार चराचर जगत के समस्त रूप उसी एक परम-तत्त्व की अभिव्यक्ति हैं।
Step 4 [1 mark]	**तीसरा दृष्टांत एवं हिन्दू-तुर्क भेद**	बीज एवं वृक्ष के दृष्टांत से कबीर समझाते हैं कि अनेक बीजों एवं वृक्षों में एक ही जीवन-तत्त्व विद्यमान है। इन सहज दृष्टांतों द्वारा वे सिद्ध करते हैं कि हिन्दू एवं तुर्क का धार्मिक भेद अज्ञान-जनित एवं ऊपरी है; ईश्वर 'केसव' (हिन्दू) एवं 'करीम' (मुसलमान) दोनों रूपों में एक ही है।
Step 5 [1 mark]	**निष्कर्ष — समन्वय एवं अद्वैत**	इस प्रकार कबीर सोना-गहना, जल-तरंग एवं बीज-वृक्ष के अनुभव-जन्य दृष्टांतों द्वारा अद्वैत — ईश्वर की एकता — को सरलता से स्थापित करते हैं। उनका संदेश सामाजिक-धार्मिक समन्वय का है : जब ईश्वर एक है, तो हिन्दू-मुसलमान का बैर निरर्थक है। यही पद का कालजयी भाव है।

COMMON LOSS OF MARKS:

- केवल 'ईश्वर एक है' लिखकर रुक जाना — कम-से-कम तीन दृष्टांत (सोना-गहना/जल-तरंग/बीज-वृक्ष) आवश्यक।
- हिन्दू-तुर्क भेद की निरर्थकता एवं समन्वय-संदेश का उल्लेख न करना।
- कबीर को सगुणोपासक/अनेकेश्वरवादी बता देना — यह निर्गुण अद्वैत है।

★ TOPPER TEMPLATE — 3 अंक — सौंदर्य-बोध — 'दिए गए पद/सबद का काव्य-सौंदर्य (भाव + अलंकार + भाषा) स्पष्ट कीजिए।'

वार्षिक

Step 1 [1 mark]	**भाव-पक्ष**	पद/सबद का भाव या तो ईश्वर की एकता (अद्वैत) है या बाह्याडंबर का खंडन। कबीर सहज, अनुभव-जन्य वाणी में या तो एक निराकार सत्ता को प्रतिपादित करते हैं या संसार के पाखंड पर तीखा प्रहार करते हुए सच्चे ज्ञान-भक्ति की ओर संकेत करते हैं।
Step 2 [1 mark]	**अलंकार-पक्ष**	रचना में दृष्टांत अलंकार (सोना-गहना, जल-तरंग, बीज-वृक्ष), रूपक/प्रतीक तथा अनुप्रास का सुंदर प्रयोग है। 'देखत जग बौराना' जैसी पंक्तियों में व्यंग्य एवं अनुप्रास की छटा है; गूढ़ अध्यात्म को मूर्त उदाहरणों से समझाना कबीर की विशिष्ट कुशलता है।
Step 3 [1 mark]	**भाषा एवं निष्कर्ष**	भाषा सधुक्कड़ी (पंचमेल खिचड़ी) है — सहज, लोकधर्मी एवं प्रहारक, जिसमें ब्रज-अवधी-राजस्थानी-खड़ीबोली के शब्द घुले हैं। गेय पद/सबद शैली, खंडन-मंडन की निर्भीक वाणी एवं दृष्टांत-योजना मिलकर कबीर की रचना को निर्गुण-काव्य का उत्कृष्ट उदाहरण बनाते हैं।

COMMON LOSS OF MARKS:

- केवल भाव लिखना, अलंकार न पहचानना (या नाम देकर उदाहरण न देना)।
- सधुक्कड़ी/पंचमेल भाषा का उल्लेख छोड़ देना।
- दृष्टांत-योजना (सोना-गहना/जल-तरंग) को सौंदर्य-बिंदु के रूप में न जोड़ना।

★ TOPPER TEMPLATE — 5 अंक — केंद्रीय भाव — 'संतों देखत जग बौराना सबद में कबीर ने संसार को बौरा क्यों कहा एवं किन आडंबरों का खंडन किया? केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।'

अधिकांश वर्षों में

Step 1 [1 mark]	**केंद्रीय भाव — 'बौरा' संसार**	इस सबद का केंद्रीय भाव यह है कि संसार पाखंड एवं विवेकहीनता में फँसकर 'बौरा' (पागल) हो गया है। उसने सच्चे ज्ञान एवं अंतर्मन की भक्ति को छोड़कर असत्य आडंबरों को सत्य मान लिया है; यदि कोई सच कहे तो उसे मारने दौड़ता है, और झूठ पर विश्वास करता है — यही उसका बौरापन है।
Step 2 [1 mark]	**हिन्दू-आडंबर का खंडन**	कबीर हिन्दू-समाज के आडंबरों पर प्रहार करते हैं — पत्थर की मूर्ति पूजने से ईश्वर नहीं मिलते; दिखावटी तीर्थ-स्नान, माला फेरना एवं माथे पर टीका (तिलक) लगाना मात्र बाह्य-चिह्न हैं, जिनसे सच्ची भक्ति का कोई संबंध नहीं।
Step 3 [1 mark]	**मुस्लिम-आडंबर का खंडन**	वे मुस्लिम-समाज के बाह्य-आचारों पर भी समान प्रहार करते हैं — टोपी पहनना, दिखावटी रोज़ा-नमाज़, बाँग (अजान) देकर पीर बन बैठना। कबीर निष्पक्ष हैं — किसी एक धर्म का पक्ष नहीं लेते, दोनों के पाखंड को व्यर्थ ठहराते हैं।
Step 4 [1 mark]	**राम-रहीम झगड़े पर व्यंग्य**	कबीर तीखा व्यंग्य करते हैं कि लोग 'राम' एवं 'रहीम' के नाम पर परस्पर झगड़ते-मरते हैं, जबकि दोनों एक ही ईश्वर के नाम हैं। नाम-भेद को लेकर लड़ना मूर्खता है; इसी अंधविश्वास एवं संकीर्णता के कारण संसार 'बौरा' है।
Step 5 [1 mark]	**निष्कर्ष — सच्चा ज्ञान**	इस प्रकार कबीर पत्थर-पूजा, तीर्थ-स्नान, टोपी-टीका-माला-छाप एवं राम-रहीम के झगड़े — सभी बाह्याडंबरों का खंडन करते हैं। उनका संदेश है कि सच्चा ईश्वर बाह्य-चिह्नों में नहीं, अंतर्मन की निर्मलता एवं प्रेम में बसता है। आडंबर त्यागकर एक निराकार सत्ता की सच्ची भक्ति ही मुक्ति का मार्ग है।

COMMON LOSS OF MARKS:

- केवल हिन्दू-आडंबर गिनाना, मुस्लिम-आडंबर (टोपी/रोज़ा/बाँग) छोड़ देना — कबीर निष्पक्ष हैं।
- 'राम-रहीम झगड़े' वाले व्यंग्य-बिंदु को भूल जाना — यह उच्च-अंक का बिंदु है।
- 'बौरा' को सीधी गाली समझ लेना — यह विवेकहीनता/पाखंड का व्यंग्य है।

MARKING SCHEME — GENERAL NOTES

- अद्वैत/एकता वाले प्रश्न में कम-से-कम तीन दृष्टांत (सोना-गहना + जल-तरंग + बीज-वृक्ष) पाठ-संदर्भ सहित आवश्यक; केवल 'ईश्वर एक है' लिखने पर अंक-हानि।
- आडंबर-खंडन के उत्तर में हिन्दू (पत्थर/तीर्थ/माला/टीका) एवं मुस्लिम (टोपी/रोज़ा/बाँग) — दोनों पक्ष आवश्यक; केवल एक पक्ष लिखने पर अंक कटते हैं।
- 'राम-रहीम झगड़े' वाले व्यंग्य एवं समन्वय-संदेश का उल्लेख उच्च-अंक का बिंदु है — इसे न छोड़ें।
- कबीर को नास्तिक अथवा सगुणोपासक बताने पर अंक-हानि; वे निर्गुण के गहरे आस्तिक एवं निष्पक्ष समाज-सुधारक हैं।
- काव्यांश-आधारित उत्तर में भाव + दृष्टांत/प्रतीक की पहचान + अंतर्निहित संदेश — तीनों स्तर अपेक्षित।
- अलंकार/काव्य-सौंदर्य के प्रश्न में अलंकार का नाम मात्र नहीं, उदाहरण-सहित पहचान आवश्यक; सधुक्कड़ी भाषा की सहजता का उल्लेख अंक दिलाता है।